संपादक के नोट

मैं तुम सबका अभिवादन हमारे प्रभु और उद्धाकरता येशु मसीह के अतुल्य नाम से करती हूँ। हम प्रभु को अच्छे फ़सल के लिए जो उसने हमे इस वर्ष दिया है धन्यवाद देते हैं। मैं आशा करती हूँ कि प्रभु तुम सबको उसकी महिमा के लिए उपयोग करे, प्राणों के फ़सल लाने में।

प्रभु यहेजकेल के पुस्तक २२:३० में कहता है – मैंने उनके मध्य एक ऐसे मनुष्य की खोज की जो शहरपनाह की मरम्मत करे, और देश के लिए दरार में मेरे सामने खड़ा हो जिस से मैं उसे नष्ट न करू; परन्तु मुझे कोई न मिला।

आज भी, प्रभु की आँखें एक मनुष्य को ढूँढ़ रहा है। हाँ, उसकी आँखें हमेशा ढूँढ़ने वाली आँखें हैं, वह खोए हुए मेमने को खोजता है। वह खोए हुए सिक्कों को ढूँढ़ रहा है।

उसी समय, उसके सामर्थ और महिमा को प्रकट करने के लिए, यहोवा की आंखें समस्त पृथ्वी पर फिरती रहती हैं, क्योंकि, उसे एक मनुष्य की ज़रूरत है जो दरार में खड़े रहकर पहरेदार हो।

एक तरफ़ पाप और अपराध इस संसार में बढ़ रहें हैं। दूसरी तरफ़, हमारा प्रभु उसके क्रोध और न्याय को दिखाने के लिए तैयार है। इस संसार के इस कठिन परिस्थिति पर, आनेवाले नाश को रोकने के लिए, हमारा प्रभु एक प्रार्थना योद्धा को खोज रहा है। प्रभु एक प्रार्थना योद्धा के खोज में है जो खाई में खड़े होकर उसके लोगों के लिए दयापूर्वक प्रार्थना करे। प्रभु की आँखें सारी पृथ्वी पर प्रार्थना योद्धाओं की तलाश में लगी हैं जो प्रत्येक देश में उसके लोगों के लिए दरार में खड़े रहने में सक्षम हैं।

केवल एक चिंगारी एक जंगल को आग लगाने के लिए पर्याप्त है, उसी प्रकार एक प्रार्थना योद्धा एक देश को आतमिक आग लगाने के लिए पर्याप्त है। परमेश्वर की आँखें ऐसा एक प्रार्थना योद्धा के लिए देख रहे हैं।

सभोपदेशक के किताब में ९:१४–१५ – एक छोटा नगर था जिसमें मुट्ठी–भर लोग रहते थे। एक बड़े राजा ने आकर उसे घेर लिया, और उसके विरूद्ध विशाल मोर्चाबन्दी कर ली। परन्तु उसमें एक गरीब बुद्धिमान व्यक्ति पाया गया और उसने अपनी बुद्धिमानी से उस नगर को बचा लिया। फिर भी किसी ने उस गरीब को स्मरण नहीं किया। हम एक गरीब बुद्धिमान मनुष्य के बारे में देखते हैं। गरीब बुद्धिमान मनुष्य इस दुनिया के लोगों के द्वारा उपेक्षित किया जा सकता है; लेकिन प्रभु सुनेगा और निश्चित रूप से उसके उत्साह और उसके हृदय की इच्छा का जवाब उसके प्रार्थनाओं में जो है वह देगा।

नबी शमूएल कहता है कि यह एक पाप है प्रभु के विरुद्ध अगर वह देश के लिए और उसके लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करता।

एक प्रार्थना योद्धा के तीन आवश्यकताएँ होती हैं –

1) उसे लोगों और प्रभु के बीच की दरार में खड़े रहना है।

2) उसे उस दरार को बंद करना है, यानी, उसे पाप के रास्ते को उसके देश, उसकी सभा और उसके परिवार में प्रवेश करने से रोकना है।

3) उसे प्रभु और उसके लोगों के बीच एक हिमायती के रूप में खड़े रहना है उसके लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए।

इस खातिर, प्रभु एक मनुष्य के खोज में है।

लेकिन प्रभु यशायाह ५९:१६ में दु:ख के साथ कहता है – उसने देखा कि कोई भी मनुष्य नहीं और अचम्भा किया कि कोई मध्यस्थ न रहा तब उसकी अपनी ही भुजा ने उद्धार किया, और उसकी धार्मिकता ने उसे सम्भाला।

मनुष्य कई चीजों के साथ आश्चर्य हो सकता है, लेकिन स्वर्ग और पृथ्वी के रचईता को आश्चर्य होता कि मनुष्य और परमेश्वर के बीच मध्यस्त करने के लिए कोई भी मनुष्य नहीं। लेकिन हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर आमोस ९:११ में कहता है – उस समय मैं दाऊद के गिरे हुए मण्डप को खड़ा करूंगा, मैं उसकी दीवार की दरारों को भरूंगा; मैं उसके खण्डहरों को फिर बनाऊंगा और जैसा वह प्राचीनकाल में था उसे वैसा ही बना दूंगा।

प्रेरितों ने भी इसी तरह के उत्साह से प्रार्थना किया प्रेरितों के काम १५:१६ के अनुसार – "इन बातों के पश्चात मैं लौटूंगा, और मैं दाऊद के गिरे हुए तम्बू को फिर से खड़ा करूंगा और उसके खण्डहरों का पुर्ननिर्माण करूंगा, और मैं उसका जीर्णोद्धार करूंगा।

इसलिए मेरे प्यारे लोगों, हम सबको हमारे देश, हमारी सभा और हमारे परिवारों के लिए मध्यस्त करने वाले बनने चहिए। तब हमारा प्रभु ज़कर्याह २:५ में ऐसा होगा – यहोवा की यह वाणी है कि मैं स्वयं उसके चारों ओर अग्नि की दिवार तथा उसके मध्य महिमा ठहरूंगा।"

मेरे अति प्रियों, मैं उम्मीद करती हूँ कि यह संदेश सक्षम होगा तुम्हे प्रभु में अपने आप को नवीनीकृत करने के लिए, अपने आप को प्रभु के लिए पुन:समर्पित करने के लिए ताकि बहुतों के लिए मध्यस्त करने वाला बने।

प्रभु तुम्हे आशीष दें तब तक कि हम फिर मिलें।

– पास्टर सरोजा म.

जागो, अपने परमेश्वर को पुकारो।

योना १:६ – तब कप्तान ने उसके पास जाकर कहा, ष्क्या बात है? तू क्यों सो रहा है? उठ, अपने ईश्वर को पुकार। हो सकता है कि तेरा ईश्वर हमारी सुधि ले कि हम नाश न हों।" कितने बच्चे योना के कहानी को जानते हैं, वह कौन था, और वह कहा जा रहा था? असल में, सारे बच्चे और बड़ें भी योना के कहानी को जानते हैं। योना एक नबी था और शायद प्रार्थना करता हो। लेकिन वह सोता हुआ पाया गया जब गहरे समुद्र में तूफ़ान उठा। शायद, वह खुश नहीं था, बीमार या चिंतित था किसी वस्तु पर। लेकिन जब जहाज का कपतान योना के पास आया, उसने उसे सोते हुए पाया, इसलिए वह उसे उठाता है और उससे प्रार्थनाओं के लिए विनंती करता है, क्योंकि कप्तान निश्चित रूप से मानता है कि परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनेगा और तूफ़ानी समुद्र को शांत करेगा ताकि जहाज डूबे नहीं। इसी प्रकार, हम में से कितने सो रहे हैं आज? यह कई कारण हो सकते हैं कि हम सोए हैं, हम बीमार हो सकते हैं, दुखी, मायूस हो सकते हैं या फिर हमारा विश्वास हिला हुआ होगा। कोई भी कारण हो, हम सो रहे होंगे। आज अन्य जाति के लोगों को देखो जो हमारे इर्द–गिर्द हैं। उन्हें लज्जा नहीं आती उनके धर्म को इठलाने में, या तो वें अपने माथे पर राख लगाए रहते हैं या तो उनके गले मे या हाथ में कुछ बंधा रहता है। देखो तो कितने धर्म जो उनके लोगों को बड़े सबेरे जगाता है उनके बजते घँटियों से और उन्हे उठकर प्रार्थना करने के लिए कहता है। इन अन्य जाति के लोगों को किसी बात की लज्जा नहीं। लेकिन हम मसीही लोग दूसरी चीज़ों में काफ़ी वक्त बिताते हैं और रविवार को देर से भी उठते है, हम कलिसिया भी नहीं जाना चाहते हैं परमेश्वर का वचन सुनने। प्रभु के लिए आदर और उसके महान कार्यों के लिए, घटते जा रहा है। येशु ने कहा मत्ती ५:२० में – क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम परमेश्वर के राज्य में कभी प्रवेश न कर पाओगे। यह शास्त्रियाँ और फरीसियाँ कौन है? यें वें हैं जिन्होंने येशु की हमेशा परीक्षा की, उन्होंने उसे चुनौती दिया और उसके कार्यों को जो उसने किया और अंत में येशु को क्रूस पर चढ़ाया। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि येशु परमेश्वर का पुत्र है लेकिन उसके साथ एक बढ़ई के बेटे के जैसा व्यव्हार किया। मत्ती १६:१ में – फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसकी परीक्षा करने के लिए उस से कहा, ष्हमें आकाश से कोई चिहन दिखा।" उन्होंने विश्वास नहीं किया कि येशु मसीह हमारे पापों के लिए मरेगा और फिर जी उठेगा और हमेशा के

लिए जीवित रहेगा उसके आत्मा द्वारा अगुवाई करते हुए। इसलिए हमारा प्यार परमेश्वर के लिए फरीसी और सदूकी के विश्वास से बढ़कर रहना चाहिए; केवल फिर हमारी धार्मिकता उनके धार्मिकता से बढ़कर होगा। २ कुरिन्थियों ११:२६–२८ कहता है – मैं बार बार यात्राओं में, नदियों के ख़तरों में, डाकुओं के ख़तरों में, ग़ैरयहूदियों के ख़तरों में, नगरों के ख़तरों में, जंगल के ख़तरों में, समुद्र के ख़तरों में, तथा झूठे भाईयों के मध्य होने वाले ख़तरों में रहा हूं। मैंने परिश्रम और कष्ट में, रात रात भर जागने में, भूख और प्यास में, अक्सर निराहार रहने में, ठण्ड में और उजाड़े रहने में दिन बिताए। इन बाहरी बातों के अतिरिक्त मुझे प्रतिदिन कलिसियाओं की चिन्ता दबाए रहती है। प्रेरित पौलुस कहता है कि जब वह भिन्न–भिन्न देशों और नगरों की ओर यात्रा करता था, भिन्न–भिन्न प्रकार के लोगों से उसकी मुलाकात होती थी और उसने वेदनाओं और तकलीफ़ों का अनुभव किया, लेकिन वह प्रभु से प्रार्थना करने में पीछे नहीं हटा। हकीकत में, हर दुख और दर्द उसे प्रभु के और नज़दीक ले आया और वह सारे कलिसियाओं के लोगों का ध्यान रखने लगा। योना, पौलुस के विपरित, जिसे हर समय प्रार्थना में रहना चाहिए था, संकट के समय सोते हुए पाया गया। हमारा जीवन योना के समान न हो। मसीही होने के नाते, हमे ध्यान रखना ज़रूरी हैं, हम चाहे जो भी परिस्थिति में हो, हमारे प्रार्थना का जीवन मज़बूत होना चाहिए, हमे परमेश्वर को हमेशा हमारे नज़दीक रखना चाहिए और यह प्रार्थना द्वारा संभव है, हमें उससे बात करना है और वह हमारे हर विनंती का उत्तर देता है। मसीही लोगों का मार्ग बहुत ही सक्रा है और येशु मसीह ने भी बार–बार कहा, "अगर वें मुझ पर हँसे या मेरी ठट्ठा उड़ाए तो वें तुम्हे भी नहीं छोड़ेंगे।" लेकिन मसीह का महान आश्वासन यह है कि "साहस रखो – मैंने संसार को जीत लिया है।" आज फिर एक बार प्रभु हमे नींद से जगाता है। पढ़े २ कुरिन्थियों ११:२६–२८ एक और बार। हम अलग–अलग प्रकारों में सोए होंगे, और कठिन परिस्थितियाँ, लेकिन हमारी हर एक परिस्थिति को परमेश्वर जानता है, उस से कुछ भी छुपा नहीं। प्रेरितों के काम २०:३१ – इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात–दिन आंसू बहा बहा कर एक एक को समझाना न छोड़ा। हमे हमारे प्रार्थना के जीवन में कभी सुस्त नहीं होना चाहिए, हम हमेशा सतर्क और प्रार्थनापूर्ण रहाना है, ऐसा न हो दुष्ट आए और उसकी गंदी चाल खेले हमारे जीवन में । जैसे हमारा परमेश्वर न सोता न ऊंघता है, वैसे ही दुष्ट कभी नहीं सोता परन्तु एक घातक सिंह है, वह हम पर झपट्टा मारने के लिए इंतजार करता है, जब हम कमज़ोर होते है, हम उसके आसान शिकार बन जाते हैं। मरकुस १:३५ कहता है – भोर को जब अन्धेरा ही था

वह उठा और बाहर निकल कर एकान्त में गया और वहां प्रार्थना करने लगा। येशु हमेशा भोर के समय प्रार्थना करता था, जब की अंधेरा ही होता। हाँ, अंधेरा हमारे जीवनों में हर प्रकार के पाप के विचार और दुष्ट योजनाओं को लाता है। अंधेरे में ही, हमारे मन में हर प्रकार के बुरे विचारों का छिड़काव होता हैं। इसलिए हमे रात के दौरान सतर्क होना चाहिए, जिस पल बुरे विचार आते हैं; हम अपने घुटनों पर बैठकर उस पल में परमेश्वर की संगती के लिए प्रार्थना करना चाहिए। यह तब है जब हम अकेले होते है कि दुष्ट अविश्वास का बीज बोता है, तो यदि परमेश्वर हमारे साथ है, कोई बुराई का काम हमारे जीवन में पूरा नहीं होता। जैसे पढ़ाई में, हम विद्यालय पूरा करके अपने आप को उन्नत करने के लिए विश्वविद्यालय जाते है, इसी प्रकार, हमे लगातार हमारे प्रभु के साथ हमारे संबंधों को उन्नत करना चाहिए, और हमे उसकी महिमा के लिए अधिक से अधिक काम करना हैं और देखना है कि हम कैसे उसके राज्य के कामों के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। मत्ती १३:२५ – ३० कहता है – परन्तु जब लोग सो रहे थे, तब उसका शत्रु आया और गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। पर जब गेहूं में अंकुर निकले और फिर बालें आईं तो जंगली घास भी दिखाई दी। तब दासों ने आकर स्वामी से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपनी भूमि में अच्छा बीज नहीं बोया था? फिर उसमें जंगली घास कहां से आई?ष और उसने उनसे कहा, षयह किसी शत्रु का काम है!" दासों ने उस से कहा, षक्या तू चाहता है कि हम जाकर उन्हें बटोर लें?ष परन्तु उसने कहा, षनहीं, ऐसा न हो कि जंगली घास बटोरते समय कहीं तुम उसके साथ गेहूं भी उखाड़ दो। कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूंगा, षपहिले जंगली घास बटोर कर जलाने के लिए उसके गट्ठे बांध लो, परन्तु गेहूं को मेरे खलिहान में एकत्रित करो"। हमे शैतान को हमारे जीवन में अविश्वास के बीज बोने की अनुमति कभी नहीं करना चाहिए। वह सिर्फ़ हमारा विश्वास को कमज़ोर करने का इंतज़ार करता है, हमें सुंदर जीवन की योजना दिखाकर जो उसने हमारे लिए बनाई है३ लेकिन अगर हम उसके उज्ज्वल रास्ते को चुनते हैं, यह अल्पजीवी है और हमारा अंत नरक कि आग में हो जाएगा। इसलिए हमें कभी अकेले नहीं रहना हैं हमे हमेशा अपने जीवन की हर परिस्थिति में हमारे प्रभु को पुकारना हैं और परमेश्वर को हमारे जीवन का मार्गदर्शन करने देना हैं, उसे हमारी नाव का स्वामी होने देना है। फिर वह सब तूफ़ान, अनिश्चितता और अविश्वास को शांत करेगा और अपने प्यार और संरक्षण के साथ हमें मज़बूत बनाएगा।

भजन संहिता ७७:२ – संकट के दिन मैंने प्रभु की खोज की, रात भर मेरे हाथ फैले रहे, वे थके नहीं। मेरे प्राण को चैन न मिला। भजन संहिता २२:२ – हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ, पर तू उत्तर नहीं देता, रात को पुकारता हूँ, परन्तू चैन नहीं पाता। जैसे दाऊद कहता है, संकट के समय, वह केवल परमेश्वर को खोजता है, क्योंकि परमेश्वर ही उसका सहायक है हर एक परीक्षण और क्लेश में चाहे दिन हो या रात, दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर ने उसे सुना और हर मुसीबत से उसे बाहर निकाला। इसलिए परमेश्वर पर विश्वास करो, संकट के समय केवल वह ही हमारा सहारा है। कभी कभी एक थके दिन के बाद, हमे देर रात बैठने के लिए मुश्किल होता है, हम चाहे कुछ भी करे, नींद हम पर समा जाती है। उस समय हमे परमेश्वर के शक्ति की ज़रूरत हैं केवल उसकी आत्मा हमें मजबूत कर सकती हैं और हम से हमारी हर कमज़ोरी (सुस्ती) ले सकती हैं और जागते रहने के लिए हमें सतर्क रखती है। मरकुस १४:३४–३८ कहता है – और उसने उनसे कहा, "मेरा मन बहुत उदास है, यहां तक कि मैं मरने पर हूं। यहीं ठहरो और जागते रहो।" फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा कि यदि सम्भव हो, तो यह घड़ी टल जाए। और वह कहने लगा, "हे अब्बा! पिता! तेरे लिए सब कुछ सम्भव है। यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" और उसने आकर उन्हें सोते पाया और पतरस से कहा, "शमौन, तु सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका? जागते और प्रार्थना करते रहो कि परिक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तैयार है, परन्तु देह दुर्बल है।" येशु मसीह भी, गतसमनी के बगीचे में, दर्द और दुख से अपने पिता की दोहाई दी और येशु तुरंत शानति और उसके द्वारा मज़बूत बनाया गया। पर जब येशु अपने चेलों के पास आया, उसने उन्हें सोते हुए पाया, उसके सब चेलों पर नींद छा गई और इस प्रकार दुष्ट की योजना को बल मिला। शारिरिक रूप से हमारा देह कमज़ोर हैं, पर जब पवित्र आत्मा हमें मज़बूत करता है, हम शक्तिशाली होते हैं हर प्रकार के चुनौतीयों का सामना करने के लिए। हमे हमारे देह को कभी कमज़ोर नहीं होने देना है और हमे हमेशा हमारी ताकत पवित्र आत्मा द्वारा प्राप्त करना चाहिए।

प्रेरितों के काम १२:६–७ कहता है – जिस रात्रि हेरोदेस उसे बाहर लाने वाला था, पतरस दो ज़ंजीरों से बंधा हुआ दो सैनिकों के बीच में सो था और प्रहरी द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे। और देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत एकाएक प्रकट हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने

पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे जगाया और कहा, “जल्दी उठ! और उसके हाथों से ज़ंजीर गिर पड़ीं।
जब हम पूरे अध्याय को पढ़ते हैं, हम देखते हैं कि कैसे सारी कलिसिया ने पतरस के लिए प्रार्थना की, जब उसे बंधी बनाकर और बंधीगृह में ड़ाला गया। यह उसके लोगों की प्रार्थना थी जो परमेश्वर ने सुनी और उसे मुक्त करने के लिए एक दूत भेजा। यह प्रार्थना की शक्ति है! यह वही शक्ति है जो नाव के कप्तान ने एहसास किया जिस में योना यात्रा कर रहा था, और इस कारण उसने योना को जगाया और उसे उसके परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा, जब तूफान समुद्र से टकराया और उन सबको डूबने का ड़र था।
१ कुरन्थियों १६:१३ कहता है – जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरूषार्थ करो और शक्तिशाली बनो। यह वचन कहता है – जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो और शक्तिशाली बनो। हमे इन तीन उपाय का निष्ठा से पालन करना है और हम हमारे हर परीक्षण में विजई होंगे। हमे कभी डगमगाना नहीं हैं। यहोशू ९:४–६ कहता है – तब वे छल करके राजदूतों के रूप में निकल पड़े। उन्होंने अपने गदहों पर फटे–पुराने और मरम्मत किए हुए कुप्पे लादे, अपने पांवों में पुराने, पैवन्द लगे हुए जूते तथा तन पर पुराने वस्त्र पहने, और भोजन के लिए सूखी और फफूंदी लगी हुई रोटियां रख लीं। तब उन्होंने गिलगाल की छावनी में यहोशू के पास जाकर उस से तथा इस्राएली पुरूषों से कहा, “हम दूर देश से आए हैं: हमारे साथ वाचा बान्ध लो।" हम इन वचनों मे देखते हैं, कैसे गिबोनियों ने यहोशू को धोका दिया यह विश्वास करने के लिए कि जो वे कह रहे है वह सच है और इस प्रकार उसे धोका दिया। यहोशू ने धोका खाया क्योंकि परमेश्वर कि आत्मा उसके साथ नहीं था। यह भूल के कारण, परमेश्वर का प्रतिज्ञा यहोशू के जीवन में पूरा नहीं किया जा सका। इसलिए हमे दुष्ट की कुटिल योजनाओं से बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि बुरी योजनाओं से ही हम बर्बाद होते हैं और हमारे जीवन में दुख और दर्द और हार लाते हैं। हम हमारे जीवन से परमेश्वर की प्रतिज्ञा भी खो सकते है। १ इतिहास २१:१ कहता है – और शैतान ने इस्राएल के विरूद्ध उठकर इस्राएलियों की गणना करने हेतु दाऊद को उकसाया। कैसे दुष्ट ने दाऊद को नीचे लाने कि कोशिश की यह कहकर कि वह इस्राएल कि गणना करे। यहाँ फिर एक बार हम देखते है, दाऊद ने परमेश्वर कि छावनी को खो दिया; उसे फिर एक बार पश्चाताप और क्षमा मांगना पड़ा, उसके बाद ही परमेश्वर ने उसे बड़े प्यार और करुणा से एक बार फिर उसे उठाया, क्योंकि परमेश्वर दाऊद से प्यार करता था। एक समान्य तरीके से, परमेश्वर हमसे भी प्यार करता हैं। हमें हमेशा हमारे जीवन में सतर्क रहना है। योना के विपरीत हमें गहरी नींद में नहीं होना चाहिए।

अन्यजातियों के समान हमें भी हमारे विश्वास में मज़बूत विश्वासी होना चाहिए और हमारे परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। जब पतरस हेरोदेस द्वारा बंधी बनाया गया, हमने कलिसिया के प्रार्थना के सामर्थ को देखा, परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनकर एक दूत भेजा पतरस को बंधिगृह से छुड़ाने के लिए। हमने दाऊद के जीवन को भी देखा, कई उदाहरणों में जहां उसने अपना विश्वास केवल परमेश्वर पर ड़ाला और कोई इनसान पर नहीं। उसे दुष्ट के विरूद्ध हर लड़ाई में ताकत, ज्ञान और मुक्ति मिली। मत्ती २४:४२–४३ कहता है – इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आ जाएगा। परन्तु यह निश्चय जानो कि यदि घर के स्वामी को पता होता कि चोर रात में किस समय आएगा तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध लगने ने देता। जैसे चोर हमारे घरों को चोरी करने से पहले हमें सूचित नहीं करता; उसी प्रकार, येशु भी हमें उसके दूसरे आगमन का सूचित नहीं करेगा। वह मध्यरात्री आनेवाला एक चोर के समान आएगा। हमें हर घड़ी तैयार रहना हैं। मत्ती १३:३४–३७ कहता है – येशु ने ये सब बातें भीड़ से दृष्टान्तों में कहीं, और वह दृष्टान्त के बिना उनसे कुछ नहीं कहता था जिस से कि नबी द्वारा जो वचन कहा गया था वह पूरा हो : "मैं दृष्टान्तों में बोलने को अपना मुंह खोलूंगा। मैं उन बातों को कहूंगा जो जगत की सृष्टि से गुप्त थीं।" फिर वह भीड़ को छोड़कर घर आया। तब उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, "खेत के जंगली घास का दृष्टान्त हमें समझा दे।" उसने उत्तर दिया, "जो अच्छा बीज बोता है वह मनुष्य का पुत्र है। हाँ, अब यह घड़ी है कि हमें जागरूक रहना है ताकि दुष्ट हमारे जीवनों में जंगली घास न बोए और हम परमेश्वर के नज़रों में गिर जाए। इसलिए हमें पहले से कई ज़्यादा जागरूक और प्रार्थना में रहना है। हम अब अनुग्रह के समय में है, अब यह समय है जब आखरी दिनों के सब चिन्ह हमारी चारों ओर हैं। पवित्र शास्त्र का हर एक वचन सत्य है और पूरा होगा; हम इसे देखेंगे। हमें सावधान और जागरूक भी रहना है। जैसे अय्युब कहता है, अय्युब १९:२५–२६ – मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं इस शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊंगा। हाँ, हमें विश्वास करना है कि हमारा उद्धारकर्ता जीवित है, और वह बादलों पर खड़ा होगा जब वह एक बार फिर लौटेगा पृथ्वी पर अपने बच्चों को इकट्ठा करने के लिए।

रोमियों १३:११ कहता है – समय का ध्यान रखते हुए ऐसा ही करो। अतः तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उसकी अपेक्षा अब हमारा उद्धार अधिक समीप है।

इफिसियों ६:१८ कहता है – प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरन्तर प्रार्थना करते रहो। और यह ध्यान रखते हुए सतर्क रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए लगातार प्रार्थना करो। प्रकाशितवाक्य १६:१५ कहता है – देखो, मैं चोर के समान आता हूं, धन्य है वह जो जागृत रहकर अपने वस्त्रों की रक्षा करता है कि नंगा न फिरे और लोग उसकी नग्नता को न देखें। यह महत्वपूर्ण है हमें याद दिलाने के लिए कि अंत–समय निकट हैं। हम अब अनुग्रह के समय में हैं और हमें इस अनुग्रह को हमारी सुस्ती और आलस के कारण नहीं खोना है, ऐसा न हो कि हम अपने आप को शैतान के कुटिल योजनाओं में दे दे। समापन में, हम संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं कि हमे योना के जैसे नहीं सोना है (नबी होने के नाते, वह प्रार्थना के अपने महत्वपूर्ण कर्तव्य को भूल गया, विशेष रूप से परेशानी के समय, वह गहरी नींद में पाया गया था)। हमें उस कलिसिया के समान होना है जिन्होंने, जब पतरस हेरोदेस द्वारा बंधी किया गया, निरंतर प्रार्थना किया। हमे कभी अकेले नहीं रहना चाहिए, ऐसा न हो कि हम प्रलोभन में गिर जाए। हमे हमेशा पवित्र आत्मा के साथ जुड़ा हुआ होना चाहिए, ताकि हम अपने जीवन की हर स्थिति में मज़बूत रहे। हमने पवित्र शास्त्र के उदाहरणों में भी देखा हैं कि यहोशू और दाऊद भी दुष्ट द्वारा परीक्षा किए गए थे और कैसे वें इन प्रलोभनों के आगे घुटने टेक दिए और बाद में परमेश्वर उन्हें अपने बचानेवाले अनुग्रह में ले आता है, क्योंकि वह उनसे प्यार करता हैं। अय्युब के समान, हर घड़ियों में हमें विश्वास करना है कि हमारा मुक्तिदाता जीवित है और हम उस से एक बार फिर मिलेंगे। सर्वज्ञ, आज का संदेश हम में से उन लोगों के लिए है जो सो रहे हैं और क्योंकि हमारे जीवन में विभिन्न परिस्थितियों के कारण, सुस्ती हैं। जागों, जागरूक और प्रार्थना में रहो, हम अंत समय के नज़दीक हैं और अनुग्रह समय में है। इसलिए, हमें परमेश्वर की अनुग्रह खोना नहीं है जो सब पर हैं। यह संदेश हम सब को मज़बूत बनाए और हमें आशीर्वाद दें।

प्रभु हम में से हर एक को आशीश दें।
– **पास्टर सरोजा म.**